"मसतकि करू थापिआ"

• जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनम संजोगि पाइआ । ताकी है ओट साध राखहु दे कारे हाथ करि किरपा मेलह हरि राइआ । (5-686)

अर्थः- हे गुरु ! जो जो जीव जिस किसी जून में आया है, उस उस जून में ही माया के मोह में फंस रहा है । मानव जनम किसी ने किस्मत से प्राप्त किया है । हे गुरु ! मैंने तो तेरा आसरा देखा है । अपना हाथ दे के मुझे माया के मोह से बचा ले मेहर करके मुझे प्रभु - पातशाह से मिला दे ।

• दानि बडौ अतिवंत महाबलि सेवक दासि कहिओ इह तथ ।
ताहि कहा परवाह काहू की जा के बसीसि धरिओ गुरि हथ ।
(4-1405)

अर्थः- गुरु रामदास बड़ा दानी है और अत्यंत महाबली है, सेवक दास मथुरा ने यह सच कहा है । जिसके सिर पर गुरु रामदास जी ने हाथ रखा है, उसको किसी की क्या परवाह है ?

• जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बंध परे । जउ साधू कर मसतकि धरिओ तब हम मुकत भए ।

अर्थः- हे भाई ! मैं जितने भी चतुराई के काम करता रहा, उतने ही मुझे माया के मोह के बंधन पड़ते गए । जब अब गुरु ने मेरे माथे पर अपना राथ रखा है, तब मैं माया के मोह के बंधनों से आजाद हो गया हूँ ।

जउ लउ मेरो मेरो करते तउ हउ बिख घेरे । मन तन बुध अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ।3।

अर्थः- हे भाई ! जब तक मैं ये करता रहा कि ये घर मेरा है, ये धन मेरा है, ये पुत्र मेरे हैं, तब तक मुझे माया के मोह के जहर ने घेरे रखा और उसने मेरे आत्मिक जीवन को मार दिया । अब गुरु की कृपा से मैंने अपनी चतुराई, अपना मन, अपना शरीर हरेक ज्ञानेंद्रियों को परमात्मा के हवाले कर दिया है, तब से मैं आत्मिक अडोलता में मस्त रहता हूँ ।

जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे । पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभए ।4। (5-214)

अर्थः- हे नानक ! कहः हे भाई ! जब तक मैं माया के मोह की पोटली सिर पर उठाए घूमता रहा, तब तक मैं दुनिया के डरों सहमों का दण्ड भरता रहा । अब मुझे पूरा गुरु मिल गया है, उसकी किरपा से माया के मोह की पोटली फेंक के मैं निडर हो गया हूँ ।

• पारब्रहम प्रभ सुघड़ सुजाण । गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाण ।

अर्थः- हे भाई ! सुंदर आत्मिक घाड़त वाला समझदार प्रभु पारब्रहम तब ही मिलता है, जब बड़े भाग्यों से पूरा गुरु मिल जाता है । हे भाई ! गुरु के दर्शन करने के लिए अपना आप गुरु के हवाले करने की आवश्यकता होती है ।

किलबिख मेटे सबदि संतोख । नाम अराधन होआ जोग । साधसगि होआ परगास । चरन कमल मन माहि निवास ।1।

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने अपने शब्द से जिस मनुष्य के सारे पाप मिटा दिए और उसको संतोख बख्शा, वह मनुष्य परमात्मा का नाम - स्मरण के योग्य हो जाता है । गुरु की संगति में रह के जिस मनुष्य के अंदर आत्मिक जीवन की सूझ का प्रकाश हो जाता है, परमात्मा के सुंदर चरण उसके मन में टिक जाते हैं ।

जिनि कीआ तिनि लीआ राख । प्रभ पूरा अनाथ का नाथ । जिसहि निवाजे किरपा धारि । पूरन करम ताके आचार ।2।

अर्थः- हे भाई ! जिस परमात्मा ने मनुष्य को पैदा किया है जब वह मनुष्य गुरु की शरण पड़ गया तो उस पैदा करने वाले प्रभु ने उसको विकारों से बचा लिया । हे भाई ! प्रभु सारे गुणों से पूरन है और निखसमों का खसम है । मेहर कर के परमात्मा जिस मनुष्य को इज्जत बख्शता है, उस मनुष्य के सारे कर्म सारे कर्तव्य सफल हो जाते हैं ।

गुण गावै नित नित नित नवे । लख चउरासीह जोनि न भवे । ईहां ऊहां चरण पूजारे । मुख ऊजल साचे दरबारे ।3।

अर्थः- हे भाई ! गुरु की शरण पड़ कर जो मनुष्य सदा ही परमात्मा के गुण इस तरह गाता रहता है जैसे वह गुण उसके लिए अभी नए हैं, जैसे पहले कभी ना देखी हुई चीज़ मन को आकर्षित करती है, वह मनुष्य चौरासी लाख जूनियों के चक्करों में नहीं भटकता । उस सिख की इस लोक और परलोक में इज्जत होती है । सदा कायम रहने वाले प्रभु की हजूरी में उस मनुष्य का मुँह रौशन होता है ।

जिस मसतकि गुरि धरिआ हाथ । कोटि मधे को विरला दास । जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि । नानक उधरसि तिस जन की धूरि ।4। (5-1340)

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने जिस मनुष्य के माथे पर हाथ रखा, वह मनुष्य परमात्मा का दास बन जाता है पर ऐसा मनुष्य करोड़ों में कोई विरला होता है । फिर, वह मनुष्य पानी में धरती में आकाश में हर जगह परमात्मा को बसता देखता है । हे नानक ! ऐसे मनुष्य की चरण धूल ले के तू भी संसार - समुंदर से पार लांघ जाएगा ।

• जि होंदै गुरु बहि टिकिआ तिस जन की वडिआई वडी होई । तिस कउ जगत निविआ सभ पैरी पइआ जस वरतिआ लोई ।

अर्थः- जिस मनुष्य को सतिगुरु ने खुद होते हुए बैठ के भाव, अपनी जिंदगी में अपने हाथों से तिलक दिया हो, उसकी बहुत शोभा होती है । उसके आगे सारा संसार झुकता है और उसके चरणों में लगता है उसकी शोभा सारे जगत में बिखर जाती है ।

तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकार करहि जिस के मसतकि हथ धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ।

अर्थः- जिसके माथे पर पूरे सतिगुरु ने हाथ रखा हो भाव, जिसकी सहायता सतिगुरु ने की वह सब गुणों में पूर्ण हो गया और सब खण्ड - ब्रहमंडों के जीव - जंतु उसको नमस्कार करते हैं ।

गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ।
जन नानक हरि करते आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखे प्रभ सोई ।3। (3-309)

अर्थः- सतिगुरु की बड़ाई दिनो - दिन बढ़ती है, कोई मनुष्य उसकी बराबरी नहीं कर सकता, क्योंकि अपने सेवक नानक को विधाता प्रभु ने खुद मान बख्शा है, इस करके प्रभु खुद लज्जा रखता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"